साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता

SAHITYA AKADEMI FELLOWSHIP

सी. नारायण रेड्डी

C. NARAYANA REDDY

6 July 2015, Hyderabad

सी. नारायण रेड्डी
C. NARAYANA REDDY

डॉ. सी. नारायण रेड्डी, जिन्हें साहित्य अकादेमी आज अपना सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता अर्पित कर रही है, एक उत्कृष्ट तेलुगु लेखक, समालोचक, कवि और गीतकार के साथ ही एक शिक्षाशास्त्री व तेलुगु साहित्य के स्वीकृत अधिकारी विद्वान हैं।

डॉ. चिंगिरेड्डी नारायण रेड्डी (जो सिनारे के नाम से भी जाने जाते हैं) का जन्म 29 जुलाई 1931 को जो निज़ाम की रियासत के नाम से जाना जाता था (बाद में आंध्र प्रदेश, अब तेलंगाना) के जनपद करीमनगर के एक छोटे से गाँव हनुमाजीपेत में हुआ। उनके माता-पिता श्रीमती बुचाम्मा और श्री मल्ला रेड्डी किसान थे और उन्होंने अपने पुत्र को पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित किया। करीमनगर से हाईस्कूल की अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद, एम.ए. की शिक्षा के लिए वे 1949 में उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद गए और 1954 में एम.ए. और 1962 में पीएच.डी.की उपाधि प्राप्त की। पीएच.डी शोध के दौरान ही उन्होंने आदर्श पेशे अध्यापन को चुना और 1955 में एक महाविद्यालय में व्याख्याता हुए। एक शिक्षाशास्त्री के रूप में उनका कैरियर उनके कविकर्म के साथ चलता रहा और वह 1976 में प्रोफ़ेसर बने।

1951 में, जब वे उस्मानिया विश्वविद्यालय के एक युवा स्नातक छात्र थे, डॉ. रेड्डी ने तेलुगु विभाग द्वारा आयोजित एक कवि सम्मेलन में हिस्सा लिया। उन्होंने अग्रज कवियों के बीच अपनी पहचान बनाई, उपस्थि कवियों ने युवा रचनाकार की आंदोलित करती कविता की सराहना की। 1965 में, डॉ. रेड्डी महासचिव के रूप में तेलंगाना लेखक सम्मेलन के वार्षिक समारोह के आयोजन में सहायक रहे। इस आयोजन के बाद अपनी बहुआयामी आयोजकीय क्षमता के कारण वे तेलुगु के सभी वरिष्ठ लेखकों के काव्य अवदान से परिचित हो गए।

डॉ. श्रीनारायण रेड्डी का लेखन बहुत उर्वर है, उनका विस्तृत लेखन विविध शैलियों—लंबी कविताओं, मुख्य छंद, गद्य-नाटक, गीति-नाटक, निबंधों, साहित्यिक आलोचना, सूक्तियों, अनुवादों और ग़ज़लों की लगभग 76 प्रकाशित पुस्तकों में दर्ज है। डॉ. रेड्डी को तेलुगु और उर्दू शायरी की रवायत में गहरी दिलचस्पी है और वे दोनों ही भाषाओं में

Dr. C. Narayana Reddy on whom the Sahitya Akademi is conferring its Fellowship today is an outstanding Telugu writer, critic, poet and lyricist, as well as an educationist and acknowledged authority on Telugu literature.

Dr. Cingireddy Narayana Reddy (also known as Cinare) was born on 29 July 1931 in the small village of Hanumajipet in Karimnagar district, in what was then the Nizam's state (later known as Andhra Pradesh, and present-day Telangana). His parents Smt Buchamma and Sri Malla Reddy were agriculturalists and encouraged their son to study. After completing his high school education at Karimnagar, he went on to study at Osmania University, Hyderabad in 1949, receiving his M.A. degree in 1954 and Ph.D. in 1962. While carrying out research for his Ph.D. he took up the noble profession of teaching and became a college lecturer in 1955. His career as an educationist continued to progress alongside his poetic career and he became a Professor in 1976.

In 1951, while still a young B.A. student at Osmania University, Dr. Reddy attended a poets gathering (*kavisammelan*) organized by the Telugu Department. He made his mark in the presence of senior poets present, who appreciated the stirring poetry of the young writer. In 1956 Dr. Reddy, as General Secretary, was instrumental in organizing the Annual Celebrations of Telangana Writers Conference. He became known to all the major Telugu writers after this event because of his dynamic organizing capabilities as well as his poetic contributions.

Dr. C. Narayana Reddy is a prolific writer with over eighty published works, which span many genres including long poems, free verse, prose-plays, lyrical plays, essays, literary criticism, aphorisms, epigrams, translations and ghazals. Dr. Reddy has a deep interest in both Telugu and Urdu poetic traditions, and is a master of both the languages. He has synthesized and

सिद्धहस्त हैं। उनकी तेलुगु रचनाओं में उर्दू शायरी के सूक्ष्म प्रभाव निर्बाध रूप से संश्लेषित हैं।

डॉ. रेड्डी की पहली पुस्तक, *नव्वानी पुव्वु* (शर्मिला फूल) कविता का एक लघु खंड थी। जो 1953 में प्रकाशित हुई। उनकी प्रसिद्ध रचनाओं में शामिल है *वेन्नेला वादा* (चाँदनी भरा क़स्बा), 1959 में प्रकाशित, रोमानी सांगीतक नाटकों की एक पुस्तक, जिसमें तेलुगु लोकगीतों को आम पाठकों की पहुँच लायक़ प्रस्तुत किया गया है। *जलपातम* (झरना), 1949 और 1953 के बीच लिखी गई लघु कविताओं का संग्रह है, जिनमें प्रभावशाली छंद पारंपरिक मात्रिक छंदों में संयोजित हैं। *दिव्वेला मुवालु* (मोमबत्ती की घंटियाँ) 1959 में प्रकाशित हुआ, जिसमें साहित्यिक व्यक्तियों के जीवन का अनुष्ठान है, साथ ही दीपावली के उत्सव को बहुत सुंदर तरीके से व्याख्यायित किया गया है। *ऋतु चक्रम* (ऋतु चक्र) 1964 में प्रकाशित हुआ, जो प्रकृति के साथ मनुष्य के अंतस्संबंध का अन्वेषण करता है, जो वर्ष भर ऋतुओं के साथ-साथ परिवर्तित होता रहता है। मध्यात्रागति मंदहासम (मध्यमवर्ग की मुस्कान), जो 1968 में छपा, में कवि मध्यवर्गीय व्यक्तियों की समस्याओं का अन्वेषण करता है और समकालीन समाज पर टिप्पणी भी करता है।

मंथालु मानवुडु (आदमी और लपटें) 1970 में छपा जो 30 लघु कविताओं का एक संग्रह है, जिसमें मनुष्य के हृदय में भरी क्रोध की ज्वाला के प्रति कवि ने अपनी आपत्ति को निरूपित किया। वह लोगो से आग्रह करता है कि समाज में प्रचलित अन्याय के प्रति अपने न्यायोचित क्रोध को सूत्रबद्ध करें। इस मुक्तछंद पुस्तक के लिए उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रदान किया गया।

अपनी कविता के लिए विख्यात डॉ. रेड्डी ने लोकप्रिय संगीत नाटक भी लिखे हैं। *रामप्पा* (1960) तेलुगु इतिहास के काकतीय काल की गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती है, तथा दस नाटकों का संग्रह *नारायण रेड्डी नाटिकाळु* (नारायण रेड्डी की एकांकियाँ/नाटक, 1978) काव्यात्मक प्रवृत्ति के उनके संगीतात्मक नाटकों के उदाहरण हैं जिनमें कला, संगीत तथा प्रदर्शन का एक उदात्त संयोग है।

डॉ. सी. नारायण रेड्डी की प्रमुख काव्यात्मक रचना *विश्वंभरा* (पृथ्वी) 1980 में प्रकाशित हुआ, जिसके लिए 1988 में ज्ञानपीठ प्रदान किया गया। इसका विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है। इस स्मरणीय मुक्तछंद रचना में काल के माध्यम से मनुष्य की यात्रा को निरूपित किया गया है, जबकि वह आध्यात्मिक, कलात्मक और वैज्ञानिक उत्कर्ष को प्राप्त करने का प्रयास करता है। इसका विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है।

1977 में प्रकाशित अपनी पुस्तक *माटी मनीषी अक्षण* (पृथ्वी और आकाश के परे मनुष्य) जो एक सौ पृष्ठों की एक लंबी कविता है, में डॉ. रेड्डी ने मनुष्य को एक गतिशील शक्ति के रूप में दर्शाया है जो समय और स्थान की सीमाओं के पार जाने की चेष्टा करता है।

seamlessly intertwined the subtle influence of Urdu poetry in his Telugu compositions.

Dr. C. Narayana Reddy's first published work was a slim volume of poetry *Navvani Puvvu* (*The Bashful Flower*) in 1953. His notable works include *Vennela Vada* (*The Moonlit Town*) in 1959, a book of romantic musical plays, which featured Telugu folk songs in order to reach out to the common reader. *Jalapatam* (*The Waterfall*), a collection of short poems written between 1949 and 1953 consists of powerful verses composed in traditional metre. *Divvela Muvvalu* (*Candle Bells*) published in 1959, celebrates the lives of literary personalities, as well as beautifully describes the festival of Deepavali. *Ritu Chakram* (*Cycle of Seasons*) published in 1964, explores man's interaction with nature as the seasons change throughout the year. In *Madhyataragati Mandahasam* (*The Smile of the Middle Class*) published in 1968 the poet explores the problems faced by the middle class and provides a commentary on contemporary society.

Mantalu Manavudu (*Flames and the Man*) published in 1970, is a collection of thirty short poems which portray the flames of anger that rage within the hearts of the people. He urges people to channelize this justifiable anger to end the injustices prevalent in society. This stirring work of poetry written in free verse received the Sahitya Akademi Award.

While famous for his poetry, Dr. Reddy has also composed popular musical plays. *Ramappa* (1960) which draws upon the glorious cultural heritage of the Kakatiya period of Telugu history, and the collection of ten plays *Narayana Reddy Natikalu* (*Playlets of Narayana Reddy*) (1978) are examples of the poetic nature of his musical plays that are a sublime blend of art, music and performance.

Dr. C. Narayana Reddy's major poetic work *Visvambhara* (*The Earth*) published in 1980, received the Jnanpith award in 1988. This monumental work in free verse depicts the journey of man through the ages as he strives to attain spiritual, artistic, and scientific excellence. It has been translated into several Indian languages.

In his book *Matti Manishi Akasam* (*Man beyond Earth and Sky*) published in 1997, which is a long poem of around one hundred pages, Dr. Reddy portrays Man as a dynamic force who tries to transcend the boundaries of time and space.

Dr. Reddy's work spans genres and styles and is not bound by literary conventions. His poetry is suffused with the spirit of universal values such as

डॉ. रेड्डी की रचनाएँ विभिन्न शैलियों में प्रसारित हैं और साहित्यिक रूढ़ियों में क़ैद नहीं हैं। उनकी कविता सार्वभौमिक मूल्यों जैसे मानवतावाद की भावना से भरी है; और वे पाठकों को पूर्णता प्राप्त करने के लिए सतत् प्रेरित करने का प्रयास करते हैं।

तेलुगु साहित्य के अगुआ के रूप में डॉ. रेड्डी ने भाषा के समालोचनात्मक अध्ययन तथा उसकी साहित्यिक विधाओं के लिए भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। उनकी 1967 में प्रकाशित कृति आधुनिक *आंध्र कवितामु संप्रदायमुलु प्रयोगमाळ्ु—मॉडर्न तेलुगु पोएट्री ट्रैडीशन एंड एक्सपेरिमेंट* आधुनिक तेलुगु कविता, उसके पूर्ववर्ती विभिन्न चरणों तथा उसकी वर्तमान शैलियों के माध्यम से विकास का एक गहन विश्लेषण है।

उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद में तेलुगु के एक प्रोफ़ेसर के रूप में डॉ. रेड्डी अपने छात्रों के बीच अपनी कुशाग्र बुद्धि, विद्वतापूर्ण अंतर्दृष्टि तथा काव्य संवेदनशीलता के लिए श्रद्धेय रहे हैं व उन्होंने कई प्रतिष्ठित समारोहों में देश का प्रतिनिधित्व किया है। वह दिसंबर 1990 में मॉरीशस में आयोजित तृतीय विश्व तेलुगु सम्मेलन में सांस्कृतिक प्रतिनिधि मंडल के अगुवा थे तथा उन्होंने 1994 में संयुक्त राज्य अमेरिका, लॉस एंजिल्स में अमेरिकन तेलुगु एसोसिएशन के तेलुगु सम्मेलन में बीज-वक्तव्य दिया।

एक शिक्षाविद् के रूप में डॉ. रेड्डी ने कई वरिष्ठ पदों पर कार्य किया। जिनमें शामिल हैं—उस्मानिया विश्वविद्यालय के तेलुगु विभाग में प्रोफ़ेसर, बी.आर.अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति; पी.एस. तेलुगु विश्वविद्यालय के कुलपति; भाषा और संस्कृति के लिए आंध्र प्रदेश सरकार के सलाहकार तथा आंध्र प्रदेश सांस्कृतिक परिषद के अध्यक्ष।

डॉ. रेड्डी ने अपने महत्त्वपूर्ण रचनाकाल में अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किए हैं। आंध्र विश्वविद्यालय, वाल्तेयर, ने 1978 में *कला परिपूर्ण* (मानद) से उन्हें समादृत किया। उन्हें अनेक राज्यस्तरीय पुरस्कार, जिनमें से प्रमुख हैं, केरल का कुमारन आशान पुरस्कार और भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता का भीलवाड़ा पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। 1982 में उन्हें सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार प्राप्त हुआ। भारत सरकार ने 1977 में पद्मश्री और 1992 में पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित किया। डॉ. रेड्डी अगस्त 1997 में भारतीय संसद के उच्च सदन राज्यसभा के लिए नामित हुए।

डॉ. रेड्डी ने कई अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अपनी प्रज्ञा के साथ भारत का प्रतिनिधित्व किया, उदाहरण के तौर पर उन्होंने 1990 में स्त्रुगा, यूगोस्लाविया में विश्व काव्योत्सव में भारत का प्रतिनिधित्व किया, जहाँ 40 देशों से आए कवियों ने अपने सृजनात्मक विचारों को साझा किया। डॉ. रेड्डी ने विभिन्न देशों की अपनी यात्राओं के दिलचस्प यात्रा-वृत्तांत लिखे हैं जिनमें — *मुचतगा मूदू वराळ्ु* मलेशिया में, पूर्व यू.एस.एस.आर. पर *सोवियत रूसियालो पादि रोजूलु* तथा *पाश्चात्य देसालो याबाई रोजुलु*

humanism and he encourages his readers to constantly strive for perfection.

As a doyen of Telugu literature, Dr. Reddy has also contributed very significantly to the critical study of the language and its literary forms. His work *Adhunikandhra Kavitamu Sampradayamulu Prayogamalu – Modern Telugu Poetry Tradition and Experiment* published in 1967 is an in-depth analysis of modern Telugu poetry, its precursors, its progression though various phases and its modern-day forms.

As a Professor of Telugu at Osmania University Hyderabad, Dr. Reddy was immensely popular among his students who revered him for his critical acumen, scholarly insights, and poetic sensibility. As a leading light of Telugu literature, he has represented the country at several distinguished gatherings. He was the leader of the cultural delegation at the third world Telugu Conference in Mauritius in December 1990 and he delivered the keynote address at the Telugu conference of the American Telugu Association, in Los Angeles, U.S.A in 1994.

As an educationist Dr. Reddy has held many senior positions in the course of his renowned career. These include Professor, Department of Telugu, Osmania University; Vice Chancellor, B.R. Ambedkar Open University; Vice-Chancellor P.S. Telugu University; Adviser to Government of Andhra Pradesh for Culture and Language; Chairman, Andhra Pradesh State Cultural Council; and President, Andhra Saraswatha Parishath.

Dr. Reddy has received many national awards in the course of his illustrious career. The Andhra University, Waltair, has honored him with *Kala Prapoorna* (Honoris causa) in 1978. He is the recipient of several state level awards including the Kumaran Asan Award of Kerala and Bhilwara Award of Bharatiya Bhasha Parishad, Calcutta. Hereceived the Soviet Land Nehru award in 1982. The Government of India has honored him with the title of *Padma Shri* in 1977 and *Padma Bhushan* in 1992. Dr. Reddy was nominated to the Rajya Sabha, the Upper House of the Indian Parliament in August 1997.

Dr. Reddy has also shed the light of his knowledge and illuminated many international forums, for instance representing India at the World Poetry Festival at Struga, Yugoslavia, in 1990, where poets from 40 countries shared their creative ideas. Dr. Reddy has also written fascinating travelogues about his travels to various countries including a tour of Malaysia in *Muchataga Moodu Varalu*, the erstwhile U.S.S.R in *Soviet*

में संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन तथा फ्रांस में की गई यात्राओं का वर्णन है।

डॉ. रेड्डी की 45 पुस्तकों को यू.एस.लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस ने प्राप्त किया है और उनके ऊपर 19 पुस्तकें लिखी गई हैं, उन्हें भी यू.एस.लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस ने अर्जित किया हैं।

डॉ. सी. नारायण रेड्डी एक प्रसिद्ध गीतकार हैं, जिन्होंने साहित्यिक रचनाओं के अलावा तेलुगु फ़िल्म इंडस्ट्री को कुछ बेहद मधुर और यादगार गीत दिए हैं। डॉ. रेड्डी के हिस्से में लगभग 3000 फ़िल्मी गीत हैं। उनकी साहित्यिक प्रतिभा का एक लोकप्रिय कला माध्यम में यह प्रसार उनके घरेलू नाम सिनारे को, तेलुगु सिनेमा देखकर अपना मनोरंजन करने वालों के बीच प्रतिष्ठित करता है।

डॉ. सी. नारायण रेड्डी वास्तव में एक बहुआयामी व्यक्तित्व हैं, जिनकी रचनात्मक प्रतिभा मानवीय प्रयत्नों के कई क्षेत्रों में फैली हुई है। वे एक उत्कृष्ट शिक्षाविद तथा प्रशासक रह चुके हैं, भाषा पर संगीतात्मक अधिकार के एक लोकप्रिय गीतकार, एक प्रभावशाली वक्ता तथा एक कवि, निबंधकार, नाटककार तथा समालोचक के रूप में उन्होंने अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की है व लेखक के रूप में तेलुगु और भारतीय साहित्य के सांस्कृतिक क्षेत्रों को अत्यंत समृद्ध किया है।

साहित्य अकादेमी अपना सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता श्री सी.नारायण रेड्डी को अर्पित करते हुए अत्यंत गर्व का अनुभव कर रही है।

– 6 जुलाई 2015, हैदराबाद

Russialo Padi Rojulu, and the U.S.A., Canada, U.K., and France in *Paschatya Desallo Yabai Rojulu*.

The US Library of Congress has acquired forty-five of Dr. Reddy's works. There have also been nineteen works written on him, which have also been acquired by the US Library of Congress.

Apart from his literary compositions Dr. C. Narayana Reddy is a well-known lyricist who has provided the Telegu film industry with some of its most melodious and memorable songs. Dr. Reddy has over 3,000 film songs to his credit. This extension of his literary genius into a popular art form has led to Cinare becoming a household name among all those who enjoy watching Telugu cinema.

Dr C. Narayana Reddy is a truly multi-faceted personality whose creative genius spans many fields of human endeavor. He has excelled as an educationist and administrator, as a popular lyricist with a musical command of the language, as an impressive orator, and as a preeminent writer in his chosen field renowned as a poet, essayist, playwright, and critic who has vastly enriched the cultural spheres of Telugu and Indian literature.

Sahitya Akademi takes immense pride in bestowing its highest honour of the Fellowship on Sri C. Narayana Reddy.

– 6 July 2015, Hyderabad

स्वीकृति भाषण

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी जी, अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव जी, संयोजक, तेलुगु सलाहकार मंडल, डॉ. एन.गोपी जी, आज के समारोह के वक्ता, प्रो. आर.वसुनंदन जी, प्रो. वाय. नित्यानंद राव जी और डॉ. एम. सुजाता रेड्डी जी तथा श्रोतागण!

मंचासीन गणमान्य व्यक्तियों और प्रबुद्ध आमंत्रितों के प्रति मैं अपनी शुभकामनाएँ अर्पित करता हूँ।

यह सुखद समारोह हर तरफ से साहित्यिक सुगंध से सुवासित है।

साहित्य अकादेमी का प्रत्येक आयोजन अपनी अवधारणा और प्रदर्शन के कारण विशिष्ट होता है। मैं अकादेमी के कार्यक्रमों-संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, प्रकाशनों, पुरस्कारों और ऐसे आयोजनों का ध्यानपूर्वक अनुसरण करता रहा हूँ। स्मृति की राह पर लौटते हुए, मैं अपने कविता-संग्रह *मंथालु-मानवुडु* (आदमी और लपटें) के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त करने के दिन के बारे में सोच रहा हूँ।

मुझे एक महत्त्वपूर्ण के रूप में मान्यता देते हुए लाइफ टाइम अचीवमेंट के रूप में आज दी जा रही 'फेलोशिप' का हर प्रकार से समादर करता हूँ। इस विशेष सम्मान के योग्य मुझे पाने के लिए, अकादेमी के अध्यक्ष, सामान्य सभा तथा अकादेमी के अन्य निकायों के सदस्यों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का मेरे लिए यह सुअवसर है। अकादेमी के दायरे में सभी 24 भाषाओं में अब तक के समय में सम्मानित 21 'फेलो' के रूप में सम्मिलित होने पर यह फेलोशिप मेरे लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। मेरे लिए यह सम्मान पूरी तेलुगु साहित्यिक बिरादरी का सम्मान है।

'फेलो' शब्द का सम्मान के संबंध में एक विशेष अर्थ है। यह एक व्यक्ति को उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त व्यावसायिक निकाय से संबंधित होने की पदवी सरीखा है जैसे कि 'रॉयल' (संगीत की रॉयल अकादमी का फेलो) एफ.आर.सी.एस., एफ.आर.एस.एल तथा ऐसे अन्य।

साहित्य अकादेमी के फेलो के द्वारा 'स्वीकृति भाषण' देने की परंपरा है। एक चुने हुए विषय पर एक तरह के शैक्षिक विमर्श के लिए अभिभाषण हो ऐसा तय नहीं है। इसलिए मैं, अपने मुख्य साहित्यिक गुण यानी 'काव्य' के बारे में अपने कुछ बेतरतीब विचार 'मनुष्य' पर अपने काम के संबंध में आवश्यकतानुसार विशेष संदर्भों के साथ व्यक्त करूँगा। अब तक मेरे 84 काम (पुस्तकें) प्रकाशित हैं। अनजाने ही, मेरी प्रकाशित पुरस्तकों की संख्या और मेरी उम्र के साल मेल खाते हैं। 35,000 से ज़्यादा मेरे फ़िल्मी गीत मेरी प्रकाशन सूची में शामिल नहीं हैं, हालाँकि वे प्रासंगिक परिदृश्य की सीमा तक काव्यगत बारीकियों से परिपूर्ण हैं। कुछ ईमानदार शोधकर्ताओं ने मेरे काम में 18 शैलियों की पहचान की है, फिर भी

Acceptance Speech

President of the Sahitya Akademi, Dr. Vishwanath Prasad Tiwariji, Secretary of the Akademi, Dr. K. Sreenivasaraoji, Convener, Telugu Advisory Board, Dr. N. Gopiji, Speakers of today's function, Prof. R. Vasunandan ji, Prof. Y. Nityananda Rao ji and Dr. M. Sujatha Reddy ji and members of the audience.

I convey my greetings to the esteemed dignitaries on the dais and the learned invitees.

This is indeed a delightful function with literary aroma pervading all around here.

Every event organized by the Akademi will be distinctive for its perception and performance. I have been assiduously following the programmes of the Akademi including seminars, workshops, publications, awards and the like. Going back into the memory lane, I think of the day I received the Akademi Award for my collection of poems *Mantalu-Maanavudu* – (Flames and Man).

I regard today's presentation of 'Fellowship' by all counts, as a significant one in due recognition of Lifetime Achievement. I take this opportunity to offer my grateful thanks to the President of the Akademi, Members of the General Council and other bodies of the Akademi for conferring on me this unique honour. The Fellowship assumes greater significance, in as much as the number of 'Fellows' at a given time is limited to 21, covering all the 24 languages under Akademi's purview. I construe this honour as one belonging to the entire Telugu literary fraternity.

The term 'Fellow' has a special connotation in matters of honour. It refers to one associated with a professional body of high reputation carrying the appellation 'Royal' like F.R.A.M (Fellow of Royal Academy of Music) F.R.C.S., F.R.S.L. and so on.

It is customary for a 'Fellow' of the Sahitya Akademi to deliver an 'Acceptance Speech'. By the very name, the speech is not warranted to be a sort of scholastic discourse on a chosen subject. I therefore, would like to spell out some of my random thoughts on my literary forte, namely 'Poetry' with particular references to my works on 'Man' when the context necessitates. So far 84 works of mine have been published. Inadvertently, the number of my books coincides with the completed years of my age. My film songs numbering over 3,500 are not included in the list of my publications, though, they are replete with poetical nuances to the extent the relevant scenario concedes.

बुनियादी तौर पर मैं एक कवि हूँ और स्पष्ट शब्दों में अपने इस रूप का मैं दावा करता हूँ। अपनी इस अवधारणा को समझाने के लिए मैं चार पंक्तियाँ उद्धृत कर रहा हूँ

पहले तेलुगु में—

'नडाका ना थल्ली
परुगु ना थांदरी
समथा ना भाषा
कविथा ना स्वासा'

इसका अर्थ है —

'गति मेरी माँ है
प्रयाण मेरा पिता
समता मेरी भाषा है
और कविता मेरी साँस'

इस कविता में मेरा प्रयास अन्योक्ति (रूपक) की तरह प्रस्तुत करना है कि संस्कृति एक माँ की तरह है और सभ्यता पिता की तरह। संस्कृति मानसिक संतुलन का प्रतीक है। सभ्यता गति का आदर्श रूप है। माँ अपने घर में पूरे विश्व की परिकल्पना करती है। जबकि पिता अपने घर को संपन्नता के शिखर पर ले जाने की आकांक्षा करता है। इन दोनों पहलुओं के सामंजस्य के मिश्रण में ही जीवन की संतृप्ति का सुराग है। तीसरी पंक्ति समानता के लिए मेरी दृढ़ इच्छा को व्यक्त करती है। इसमें सभी वर्गों के लोगों के बीच अधिकतम समानता के लिए बल है। अंतिम पंक्ति कविता की मेरी अवधारणा को रूपायित करती है। यह मेरी जीवन-शक्ति है, मेरी साँस है। मैं हमेशा स्वीकारता हूँ कि कविता रचनात्मक कार्य का उच्चतम रूप है। यह सार्वभौमिक है और समय, स्थान, क्षेत्र, धर्म और इस तरह की सभी सीमाओं को पार करती है। असल में, रचनात्मक क्षेत्र कविता के लिए पथरीली सेज है। इसके साथ संलग्नता असल में एक आनंद है। पढ़ना, लिखना और कविता में जीना तीन उदात्त गतिविधियाँ हैं। मैंने अपने एक कविता-संग्रह का शीर्षक दिया है : *कविथा ना चिरुनामा* (कविता मेरा पता है)। यह शीर्षक कविता के साथ मेरे अविभाज्य संबंध को व्यक्त करता है।

एक कविता में मैंने ज़ोर देकर कहा है :

''एक बादल के हस्ताक्षर उसकी बारिश की बूँदों में पाया जाता है
एक पेड़ के हस्ताक्षर उसकी कोमल पत्तियों में पाया जाता है
मेरे हस्ताक्षर के लिए दस्तावेज़ों की तलाश व्यर्थ है
मेरे मन का हस्ताक्षर मेरी काव्य कृतियों में पाया जाता है''

मेरे विभिन्न काव्यात्मक कार्यों में 'मनुष्य' केंद्रीय स्थिति में है। मेरे द्वारा चित्रित मनुष्य सकारात्मक और आशावादी है और मैं अपने काम में प्रगतिशील मानवतावाद की वकालत करता हूँ। अब मैं अपनी कविताओं में चित्रित 'मनुष्य' की विशेषताओं का संक्षेप में ब्यौरा दूँगा। एक प्रकार से, मनुष्य एक शाश्वत सत्य का प्रतिनिधित्व करता है। मेरी कविताओं में मानवता दिखाई देती है। साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत मेरी पुस्तक *मंथालु-मानवुडु* (आदमी और लपटें) पौराणिक चरित्र 'मारुति' और

Some earnest researchers have identified 18 genres in my works. Nevertheless, basically I am a poet and I claim myself as such in unequivocal terms. I even called it my breath in a poem. I quote four lines to explain my concept further:

First I give in Telugu

"Nadaka Naa Thalli
Parugu Naa Thandri
Samatha Naa Bhaasha
Kavitha Naa Swaasa"

It means:

"Move is my Mother
March is my Father
Equality is my language
And poetry is my breath"

My attempt in this poem is to allegorically state that culture is like a Mother and civilization is like a Father. Culture signifies composure. Civilization personifies speed. Mother always visualizes the whole world in her home. While Father aspires to carry his home to the Zenith. A harmonious blend of these two aspects leads to fulfillment of life. The third line tells of my strong desire for equality. It is an emphasis for utmost parity among all sections of people. The last line epitomizes my perception of poetry. It is my life force, my breath. I always hold that poetry is the highest form of creative work. It is universal and does surpass all limitations of time, space, region, religion and the like. In fact, creative faculty is the bed rock for poetry. Involvement with it is indeed a bliss. To read, to write and live in poetry are three sublime activities. I have titled one of my collection of poems as *Kavitha Naa Chirunaama* (Poetry is my Address). This explains my inseparable bond with poetry.

I asserted in a poem:

"The signature of a cloud is found in its rain drops
The signature of a tree is found in its tender leaves
It is futile to search documents for my signature
The signature of my mind is found in my poetic works."

Man is at the centre stage of several of my poetical works. The Man I portray is positive and optimistic and I advocate Progressive Humanism in my works. I shall now briefly recount the characteristics of 'Man' as delineated in my poetry. In a way, Man represents an eternal Truth. Humanity reflects in my poems. In my Sahitya Akademi Award-winning *Mantalu-*

'मार्कण्डेय' के सनातन चरित्र और मनुष्य की प्रगतिशील प्रकृति को निरूपित करते हैं। प्रतिकूल शक्तियाँ उन्हें बाधा पहुँचाती हैं, मनुष्य उन पर क़ाबू पाने के लिए संपूर्ण आशा और विश्वास के साथ उज्ज्वल भविष्य की ओर आगे बढ़ रहा है।

मेरा एक संकलन है *भुगोलामंथा मनीषि बुम्बा* (ग्लोब के आकार का आदमी)। इसकी अंतिम कविता की अंतिम पंक्तियाँ प्रेरित करती हैं :

''मानवतावाद जो अपने पंख फड़-फड़ा रहा है,
वाक्पटु पते के पिंजरे में
उड़ने के लिए स्वतंत्र हो जाएगा
और हर घर की डेवढ़ी पर उतरेगा
नए युग के तोरण पर
सृजन के उठान पर।
मनुष्य की आकृति ऊपर खड़ी होगी
ग्लोब की तरह।''

मानिषि-चेलुका (आदमी और तोता) शीर्षक की अपनी एक अन्य पुस्तक में मैंने मनुष्य की अनिवार्य ज़रूरतों पर बल देने की कोशिश की है, जिससे कि वह अपनी सारी शक्ति को समंजित करे और बुरी शक्तियों को नष्ट करे तथा निर्दोष और धर्मी होने के विशेषाधिकार पर ज़ोर दे।

अपने एक और संकलन *मानिषिगा प्रविहिमचालिनि* (मनुष्य की तरह प्रवाहित होने के लिए) में, मैंने प्रत्येक के जीवन की पूर्णता प्राप्त करने की प्रक्रिया के बुनियादी सिद्धांत को दोहराया है कि तुच्छ मुद्दों पर उदास न हो और एक प्रतिमान स्थापित करो।

अब मैं मनुष्य पर आधारित अपनी तीन रचनाओं, शीर्षक *भूमिका* (आधार), *मट्टी-मानिषि आकाशम्* (पृथ्वी और आकाश से परे मनुष्य) और *विश्वंभरा* (पृथ्वी) के सरोकारों पर बात करूँगा। कुछ आलोचकों ने इन्हें सामग्री और व्यवहार के आधार पर मनुष्य पर लिखा गया आधुनिक महाकाव्य माना है। मैंने *भूमिका* इन पंक्तियों के साथ शुरू की है —

''भाव सृजन का आधार है
दृष्टि के लिए कल्पना आधार है
....
निर्वात आकाश का आधार है
समस्त संसार के लिए गतिशीलता आधार है।''

इस लंबी कविता के विस्तृत दायरे में वेदों, स्मृतियों, उपनिषदों, महाकाव्यों, महापुरुषों, घटनाओं आदि को उनके निहितार्थों के साथ विषयबद्ध किया गया है। यह इस प्रकार समाप्त होती है —

''मनुष्य को इस कविता के लिए बचना है
विकास के अमोघ प्रकाश के लिए,
जागरूकता इस कविता का रूप है
जो आधार की तरह क्रियाशील है
समस्त जीवंत संस्कृति के लिए।''

Maanavudu (Flames and Man) the mythological figures 'Maruthi' and 'Markandeya' denote the eternal character and progressive nature of Man. Though adverse forces are impeding him, Man is over-coming them and proceeding into bright future with full hope and confidence.

I called an anthology *Bhoogolamantha Manishi Bomma* (Globe size figure of Man). The concluding lines of the last poem exhort:

"Humanism that is flapping its wings
in the cage of eloquent address
Will become free to fly
And descend at the threshold of each house
On the banner of a New era
Raised by the Creation.
The figure of Man will stand aloft
As the Globe."

In yet another book entitled *Manishi-Cheluka* (Man and Parrot) I tried to emphasize the imperative need for Man to pool all his strength and destroy evil forces and assert his prerogative to be unblemished and righteous.

In one more anthology *Manishigaa Pravahimchaalani* (To flow like Man), I reiterated the principle underlying the process of attaining perfection in one's life without getting depressed over petty issues and stand a paradigm.

Now I shall deal with my three works on Man, namely *Bhoomika* (The Base), *Matti-Manishi-Aakasam* (Man Beyond Earth and Sky) and *Viswambhara* (The Earth). Some critics reckon them as modern epic poems on Man for their content and treatment. I started *Bhoomika* with the lines:

"Emotion is the base for creation
Imagination is the base for vision
\- - - - - - - - - - - - - - - -
Vacuum is the base for the sky
Dynamism is the base for the whole world"

The long poem embowers by implication a wide range of subjects including Vedas, Smritis, Upanishads, epics, great persons, events and so on. It ends thus:

"Man is the refrain for this poem
For the unfailing light of evolution,
Awareness is the form for this poem
Which operates as the Base
For the entire vibrant culture."

मट्टी-मानिषी आकाशम् (पृथ्वी और आकाश से परे मनुष्य) भी मनुष्य पर केंद्रित है। इस महाकाव्य की विषयवस्तु इस प्रकार है—

धरती और आकाश को क्रमश: स्थान और समय के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है, यह महाकाव्य (लंबी कविता) मनुष्य को इन दोनों के समन्वयक के रूप में दर्शाता है। पृथ्वी अपनी अमरता पर गर्व महसूस करती है, लेकिन आकाश के अधीन है। आकाश समुद्र की उद्विग्नता है। मनुष्य इन शक्तियों की एक प्रतिकृति है। पाँच ज्ञानेंद्रियों का अनुवर्ती होकर, वह अपनी पहचान खो देता है तथा सत्य और भ्रम के बीच झूलता है। लेकिन जल्द ही, वो उठता है और तर्कवाद को जीवन-प्रेरणा की तरह अपनाकर आगे बढ़ जाता है। वह जीवनप्रद साँस की तरह आशा को अपनाकर महान ऊँचाइयों की ओर गति करता है। ऐसे मनुष्य को मृत्यु नहीं प्राप्त होती। यदि मृत्यु होती है, तो सिर्फ़ देह की, उसकी कल्पनाओं की नहीं। अपने सतत् प्रयासों से समय और स्पेस को जीतता हुआ सदा एक बहुआयामी मनुष्य इसकी पृष्ठभूमि में दिखता है।

महाकाव्य की अंतिम पंक्तियों में विचार का सार है—

''मनुष्य
अपने मंच के रूप में संसार को परिवर्तित कर रहा है
आकाश को अपने मुकुट के रूप में आकार दे रहा है
प्रत्येक में अपनी छवि का साक्षी हो रहा है
सभी के विचारों को अपने आत्म में बदल रहा है
हर प्रवहमान गतिशीलता के साथ रह रहा है
एक अभिनेता की तरह बिना प्रस्थान किए।
वह सूत्रधार है
पूरी सृष्टि की व्यवस्था की रखवाली भी कर रहा है।
वो पृथ्वी और आकाश से परे है।''

विश्वंभरा (पृथ्वी), तीसरी, मेरी प्रसिद्ध रचना है, जिसके लिए प्रतिष्ठित ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

विश्वंभरा (पृथ्वी), लंबी कविता, मनुष्य से संबंधित है। यह 'मानवोपनिषद्' का एक प्रकार है। मनुष्य इस कविता का नायक है। यह विस्तृत प्रशस्त पृथ्वी मंच व व्यवस्था प्रदान करती है। मनुष्य की कहानी की विषयवस्तु नाम और तारीख़ों में बँटी हुई है। मसीह, अशोक, सुकरात, बुद्ध, लिंकन, लेनिन, मार्क्स, गाँधी तथा अन्य चरित्रों को इसमें स्थान मिला है, लेकिन उनके नाम के साथ नहीं। उन महापुरुषों द्वारा प्रतिपादित प्रकांड सिद्धांत काव्य प्रतीक हैं जो उन्हें हमारी स्मृति में वापस लाते हैं। प्रकृति कथा की पृष्ठभूमि तैयार करती है। मन की शक्तियाँ मनुष्य को विभिन्न भूमिकाएँ निभाने के लिए प्रेरित करती हैं। सच कह रहा हूँ, प्रकृति मनुष्य की तुलना में अधिक सुंदर है। वह अधिक शक्तिशाली है। इन सभी विशेषताओं के बावजूद, प्रकृति का अस्तित्व व्यर्थ हो गया होता यदि मनुष्य न होता। *विश्वंभरा* में मैंने यह प्रस्तावना की है —

''मेरे जन्म से पहले—
विचारों की सीढ़ियाँ चढ़ते इन बादलों

Matti – Manishi – Akasam (Man Beyond Earth and sky) also focuses on Man. The theme of the epic poem is as follows:

Taking the earth and the sky as the symbols of place and time respectively, this epic (long poem) depicts Man as the coordinator of the two. The earth feels proud of its immortality, but is subdued by the sky. The sky is jealous of the sea. Man is a replica of these forces. Yielding to the five sense organs, he loses his identity and hangs between truth and illusion. But soon, he wakes up and moves forward adopting rationalism as the life-spur. He grows into great heights with hope as the vital breath. Such man has no death. If death exists, it is only for the body and not for his imaginations.Viewed in this backdrop, the ever dynamic Man endeavours relentlessly to conquer time and space.

The last lines of the epic summarizes the concept:

"Man
Converting the world as his stage
Shaping the sky as his crown
Witnessing his image in everyone
Turning the ideas of all into his own self
Living with ever flowing dynamism
Is an actor without an exit.
He is the coordinator
Ever guarding the order of the entire universe.
He is beyond earth and sky."

The third one *Viswambhara* (The Earth) is my Magnum Opus, having secured the prestigious Jnanpith Award.

Viswambhara, a long poem, deals with Man. It is a sort of 'Maanavopanishat'. Man is the hero of this poem. This vast expansive earth provides the stage and setting. The theme is man's story, which dispenses with names and dates. The profiles of Christ, Asoka, Socrates, Buddha, Lincoln, Lenin, Marx, Gandhi and others find a place in it, but not with their names. The outstanding principles enunciated by those great people are the poetical symbols, which bring them back to our memory. Nature offers the backdrop for the story. Powers of the mind motivate the Man to play several roles. Really speaking, nature is more beautiful than the Man. It is even stronger. With all these attributes, the existence of nature would have been futile, had there been no Man. I presented this proposition in *Viswambhara* :

"Before I was born –
These clouds mounting the stairs of views

में लालसा भरी वह तड़प इंतज़ार में थी जो उन्हें निचोड़ लेगी,
खगोलीय नियम के लिए सितारे कब से तो प्रतीक्षा में थे
जो उनकी गति को रत्न की तरह गूँथ लेगा
अनुकूल विचारों के धागों में
कितनी तीव्र थीं गुलाबी भोर की धड़कनें
आत्माओं की प्रतीक्षा में
जो अपनी आभा के साथ प्रभा के शानदार महासागरों से मुक्त हुईं
और वह झाग भरा उन्मादी प्रवाह आत्माओं को मुक्त करता हुआ।
कैसे तो चुभ रही थी चाँदनी आत्माओं के समागम के लिए
जो उन्हें आवरण बन समेट लेगी
पृथ्वी पर।''

मनुष्य ने सभी पंचतत्त्वों के सम्मिलन में ख़ुद को सर्वोत्तम साबित किया है। यद्यपि, भौतिक रूप से मनुष्य का आकार छोटा है, फिर भी वह अंतरिक्ष पर विजय प्राप्त कर सकता है। पवन, जल और प्रकाश उसके आदेश पर उसकी सेवा कर रहे हैं। कलात्मक, वैज्ञानिक और आध्यात्मिक प्रगति के साथ मनुष्य प्रकृति की छिपी हुई शक्तियों की खोज कर रहा है। इन पर क़ाबू पाने के लिए इस सतत् संघर्ष और प्रयास में मनुष्य को कई बाधाओं का सामना करना पड़ा है। यद्यपि घायल हुआ, लेकिन उसने एक क़दम भी पीछे नहीं हटाया। ज़मीन पर गिर रही एक सूखी पत्ती अपनी शाखा पर कभी नहीं पहुँचती और पर्वतों की ऊँचाइयों पर भी नहीं।

यह प्रक्रिया प्रकृति और मनुष्य का अंतर बताती है। कोई तर्क कर सकता है कि मनुष्य नश्वर है और वह हवा और प्रकाश की तरह स्थायी सुविधा नहीं है। लेकिन मनुष्य जिसकी मैं प्रस्तावना कर रहा हूँ वह मनुष्य मात्र नहीं है जो जन्म और मृत्यु के चक्र में फँसा है। इससे मृत्यु की एक अस्पष्ट धारणा हो जाएगी। मनुष्य अपनी गतिशीलता में अमर है। वह विभिन्न बाधाओं के बावजूद सतत् गतिशील है। राह बहुत कठिन है और बहुत गंभीर चक्रवात दिखते हैं। संपूर्ण मनुष्य वह है जो सभी परीक्षणों और दारुण दुखों में भी खड़ा रहता है। महाकाव्य मनुष्य के अधिकार के लिए काल से आधुनिक समय तक की यात्रा है। यह काल की त्रिपक्षीय यात्रा है।

मैं *विश्वंभरा* की अंतिम कुछ पंक्तियों से अपना वक्तव्य समाप्त करूँगा—

''धूल सने पाँवों के साथ
आकाश के छोर छू रहा हूँ
दो स्कंधों के साथ तैर रहा हूँ
असीम नीलिमा के आर-पार
प्राण पखेरू उड़ रहे
आकाश के सभी छोरों को हिलाते हुए
अपने आबद्ध आंदोलित डैनों के साथ।
यह रास्ता है अनंत
कल्पों का
संत और असंतों के बीच
शिष्टता और भ्रष्टता के बीच

Longingly awaited the yearning that would squeeze them,
How long the stars waited for the laws of astronomy
That would string their motions like gems
With the thread of cohering thought
How intense was the throb of rosy dawns
Waiting for the spirits liberated by the
Splendid oceans of effulgence in their looks
And the frenzied flow of those foaming
Spirits emancipated.
How the moonlight pined for the mating spirits
That would be veiling themselves in the mantles
Slung on earth!"

Man proved himself superior to all the five elements put together. Though the stature of Man is small physically, he could conquer the space. Air, water and light are serving him to his command. Progressing artistically, scientifically and spiritually, Man has been discovering hidden forces of Nature. In this continuous struggle and endeavours, Man faced many hurdles and yet could overcome them. Though wounded, he did not beat a retreat. A dry leaf falling to the ground can never reach up its branch and so also a mountain peak. The phenomenon explains the difference between the Nature and the Man. One may argue that Man is mortal and that he is not a permanent feature like air and light. But the Man, I refer to is not just a human being, subjected to the cycle of birth and death. There will be an obscure impression of death. Man is immortal in the onward march. He is constantly on the move though there are several impediments. The path is quite rough and whirlwinds of serious proportions do appear. Complete Man is he who withstands all these trials and tribulations. The epic unfolds the journey of Man right from the primitive period to the modern times. It is a trilateral journey through the ages.

I would like to conclude my speech with the last few lines from *Viswambhara* :

"With feet planted on the dust
Touching the fringes of the sky,
Swimming with two wings
Across the boundless blue
Flies the bird of life,
Shaking all corners of the sky
With its stirring pinions.
This is the path of no return
The path of aeons.
Between the sage and the brute
Between refinement and defilement

आवेग और बाध्यता के बीच
करुणा और संहार के बीच
मस्तिष्क एक सुकोमल संतुलन साधता है।
मस्तिष्क एक प्रथमजात (आदि) बीज का दर्शन करता है
मनुष्य मस्तिष्क का वस्त्र है
और सृष्टि है मनुष्य का आवरण।
यह पृथ्वी की नित्य प्रकृति है
यही जीवन का सनातन लक्षण है।''

मेरे 'स्वीकृति वक्तव्य' को सुनने के लिए धन्यवाद!

आप सबको शुभकामनाएँ

– सी. नारायण रेड्डी

Between impulsions and compulsion
Between compassion and carnage
The mind holds the balance delicate
The mind sows the seed primordial.
Man is the robe of the mind
And the universe is the mantle of Man.
This is Earth's perennial nature
This is life's eternal feature."

Thank you very much for listening to my 'Acceptance Speech'.

Wish you all well,

– C. Narayana Reddy